Saarth E-Journal

# Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.20

Impact Factor : 6.89
Quarterly
April to June 2023

## संस्कृत लघु कथाओं में आधुनिक विषय
## (मानवीय संबंधों के संदर्भ मे)

**डॉ. राकेश ऐन. जोशी**

**सारांश:**

उन्नीसवीं सदी का अन्तिम व बीसवीं सदी का प्रथम दशक संस्कृत की लघु कथाओं के लिए सर्वाधिक उन्मेष की अवधि माना जाता है। जिस कथा विधा को आज लघुकथा, कहानी, शार्टस्टोरी या गल्प आदि नामों से जाना जाता है, उसमें संस्कृत लेखक का रुझान कम से कम दो सदियों से रहा है। यह माना जाता है कि लघुकथा का यह प्रकार पाश्चात्य साहित्य से भारतीय साहित्यकार के साक्षात्कार की एक परिणति है। आधुनिक युग में लघुकथा के इस रूप का उद्विकास पाश्चात्य साहित्य की देन है।' किन्तु यह सवीश सत्य नहीं है क्योंकि संस्कृत में कथाविधा की परम्परा शताब्दियों नहीं, सहस्राब्दियों पुरानी है। बेद और पुराण के उपाख्यान भी कथाएँ हैं और संक्षिप्त हैं। पंचतन्त्र की कथाएँ अति प्राचीन होते हुए इतनी सुगठित हैं कि उन्हें विश्व के कथा साहित्य की जननी मानने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनमें कथा के समस्त तत्व विद्यमान हैं। इसी परम्परा में शिक्षाप्रद कथाएँ निरन्तर संस्कृत में लिखी जाती रही जिनमें हितोपदेश, भोजप्रबन्ध आदि आते हैं। दशकुमार चरित में एक श्रृंखला में गूँथी गई कथाएँ स्वयं में लघुकथा के रूप में देखी जा सकती हैं और उन पर कोई परदेशीय प्रभाव भी नही। संस्कृत में "अरेवियन नाइट्स के तर्ज पर लिखी गई शुक सप्तति" जैसी लघु कथाएँ तोता मैना की कहानियों के समकक्ष ही हैं। इन कथाओं में "शार्टस्टोरी" या कहानी के प्रायः सभी तत्य विद्यमान हैं-घटनाक्रम, पात्र, चरित्र

चित्रण, परिवेश और सन्देश। ये लघु कथाएँ विषया वस्तु की दृष्टि से अपन युग के प्रभाव को समेटे हुए हैं। इनमें आदर्शवाद तथा कपोल कल्पनालोक के विपरीत स्वाभाविकता तथा यथार्थता का समावेश किया गया है।

**मुख्य शब्द:** संस्कृत साहित्य, लघु कथा, आधुनिक परिवेश, परिस्थित, युग, काल।

**प्रस्तावना:**

लघु कथाओं में आधुनिक युग के संवेदनशील विषयों को मार्मिक ढंग से न केवल प्रस्तुत किया गया है,अपितु उनमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों की समस्याओं का उचित समाधान खोजने का भी प्रयास किया गया है। आज विधवा विवाह या सती कर्मकाण्ड ना भीषण नही जितना आज के वैज्ञानिक वा मशीनी युग में संवेदनहीन मानवीय सम्बन्धों का है। पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिला चलने की इच्छुक नारी को घर से कार्यस्थल किन मनोवैज्ञानिक दबावों तथा पीड़ाओं को झेलना पड़ता है। शिक्षा का बढ़ता बोझ फिर भी बेरोजगारी, वृद्धों के साथ समायोजन न कर पाने की समस्या मंदिर से संसद तक पग-पग पर भ्रष्टाचार, यौतक समस्या, आतंकवाद इत्यादि अनेक विषयों को संस्कृत लघुकथा लेखकों ने अपनी कथाओं का कथ्य बनाया है।

## संस्कृत लेखक और लघु कथाएँ (मानवीय संबंध के संदर्भ में):

संस्कृत में लघुकथा लेखकों की लम्बी सूची है तथापि पं क्षमाराव, पं. गणेश राम शर्मा, डॉ.वीणापाणि पाटनी, कलानाथ शास्त्री, डॉ. नलिनी शुक्ला, डॉ. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, आचार्यबाबूराम अवस्थी, श्री केशव चन्द्रदाश आदि ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने संस्कृत कथाओं में नवीनविषयों को निवद्ध कर संस्कृत लघु कथा साहित्य को अन्य भाषाओं के कथा साहित्य के समकक्ष लाकरखड़ा कर दिया है। इसीलिए संस्कृत लघु कथा साहित्य का आज पर्याप्त विकास हुआ है। इनमें मानवसम्वन्धों, पीड़ाओं, संवेदनाओं, अभाबों को प्रतिबिम्बत किया गया है, जो चिन्तन की दृष्टि से नितान्तनवीन विपय है। वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानवीय सम्बन्धों में हो रहे परिवर्तनों के अध्ययनहेतु पर्याप्त सामग्री संस्कृत लघु कथा साहित्य में प्राप्त होती हैं। आज की वैज्ञानिक समृद्धि के मध्यमानवीय संवेदनाएं लुप्त होती जा रही हैं। अतः मानव मूल्यों व मानवीय संवेदनाओं की अपेक्षाओं कोदृष्टिगत रखते हुए संस्कृत लघुकथाओं में किस प्रकार आधुनिक विषयों को समाहित किया गया है तथामानवीय सम्बन्धों के समस्या परक विषयों को क्रिस प्रकार समाधान तक पहुंचाने की शिक्षा दी गयीहै। इन्ही तथ्यों को प्रस्तुत करना उक्त शोध पत्र का उद्देश्य है।

लघुकथाएँ अपने युग के प्रभाव को समेटे हुए होती हैं।इसलिए किसी भी कथा के माध्यम से लेखक समस्याओं को देखताही नहीं अपितु उनका सफल और सरल समाधान देना भी अपनाकर्तव्य समझता है। “वह समाज की समस्त विषमताओं का चित्रणकरके उन पर प्रहार करता है और इस प्रकार सामाजिक जीवन कोनई दिशा प्रदान करने का प्रयास करता है। मनुष्य एक सामाजिकप्राणी है और मानवीय सम्बन्धों का उसके जीवन के विकास मेंअति महत्व है। वस्तुतः आज के व्यस्त जीवन में लघुकथाओं के द्वारामानवीय सम्वन्धों का

विश्लेषण जिस सफलता के साथ संस्कृतकथाकारों ने किया है वह स्वयं में अद्भुत है। हर युग की अपनीपीड़ा अपनी वदना होती है। वर्तमान युग की अनेक पीड़ाओं वसमस्याओं के मध्य एक पीड़ा जो अत्यन्त धनीभूत होती जा रही हैवह है-मानवीय सम्बन्धों की कटुता व संवेदन हीनता। संस्कृतलघुकथाओं में इस पक्ष पर अत्यन्त सशक्त रूपसे कथाकारों नेध्यान दिया है। मानवीय सम्वन्धों का निर्माण प्रथमतः परिवार केमध्य ही होता है किन्तु आज मानवीय सम्वन्धों का आधार यहपरिवार ही विघटन की कगार पर आ पहुँचा है। इसके अतिरिक्तदाम्पत्य जीवन, नारी की स्थिति तथा विवाह के प्रति परिवर्तितदृष्टिकोण इन सभी पक्षों पर लघु कथाओं में विचार किया गया है।वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता की आधारभूत इकाईपरिवार ही है। अपने मूल रूप में परिवार की संरचना पति-पत्नीऔर बच्चों से मिलकर बनी होती है। इस दृष्टि से प्रत्येक परिवार मेंतीन प्रकार के सम्बन्ध विद्यमान होते हैं- १.पति-पत्नी में सम्बन्ध,२.माता- पिता एवं बच्चों के समबन्ध, ३.भाई-बहनों के सम्बन्ध।एक परिवार में वैवाहिक एवं रक्त सम्बन्धों का पाया जानाआवश्यक है। इन सम्बन्धों के अभाव में परिवार का निर्माण सम्भवनहीं है। वर्तमान में नवीन औद्योगिक एवं वैज्ञानिक प्रगति नेअर्थव्यवस्था पर बहुत प्रभाव डाला। आधुनिक शिक्षा जागृति कीलहर, रुढ़ियों व परम्पराओं के विरोध व महत्वाकांक्षा केफलस्वरूप परिवार में विघटन की प्रक्रिया स्वाभाविक थी। त्यागएवं परसौहार्द की आधारशिला पर टिके सम्बन्धों पर स्वार्थमयताने आधिपत्य कर लिया है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक युग मेंजीविकोपार्जन की समस्या के कारण भी छोटे नगरों से महानगरोंकी और पलायन हो रहे हैं। फलतः पारिवारिक सम्बन्धों में दूरियोंबढ़ती जा रही हैं। आधुनिक संस्कृत लेखक इन समस्याओं सेपराङ्मुख नहीं हुआ है। लघुकथाओं में इन विषयों को मुख्यतयाउजागर किया गया है।

पारिवारिक सम्बन्धों को जीवन्त बनाए रखने के लिए बाल-क्रीडायें आवश्यक हैं। डॉ. नलिनी शुक्ला ने इस तथ्य को वहीसंवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है-***'कलरवशिचन्ता च'***नामककथा में सुधीर के पिता सुधीर के वच्चों के खेलने पर उन्हें डाँटते हैं।उनके अनुसार बच्चों को खेलने की कोई आवश्यकता नहीं है-

**"आवश्यकतैव का क्रीडनस्य ? क्रीडनमन्तरा किं कार्य न चलति ?**
**शान्तिमाधाय सद्वालकाइव पठत, लिखत, अध्ययनं कुरूत ।**

जबकिसुधीर व नन्दिनी को लगता है कि वच्चों के सम्यक् विकास में क्रीडाका अत्याधिक महत्व है-". है.....

**बालकानां जीवने तुक्रीडनस्य अतिमहत्वं वर्तते । परमस्माकं शिशवस्तु एतस्मादपिवञ्चिताः वर्तन्ते।यद् एती वृद्धी वोधयेद् यत् क्रीडायाः अभावएतेषां शिश्रूनां सम्यग् विकासाऽवरोधको भविष्यति। परभीत्याकिमपि वक्तुं नाक्षमेताम्"।**

व्यक्ति को गलत बात का समर्थन करने के लिए वाध्य करता हो- एकाकी परिवार को बढ़ावा देता है जिसमें रहकर बच्चे का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

आधुनिक युग में नारी की क्रियाशीलता ने भी मानवीयसम्बन्धों को प्रभावित किया है। नारी शिक्षित हो आगे बढ़ेअर्थोपार्जन में पुरुष का सहयोग करें यह तो सबकी अभिलाषारहती है परन्तु उससे परिवार की अपेक्षाओं में परिवर्तन नही होसका है इन दो पाटों के मध्य कसमसाती नारी जव परिवार एवंकार्य के मध्य सामंजस्य नहीं बना पाती तो परिवार से अलग होजाना ही ठीक समझती है। **'उर्मिचूड़ा'** नामक कथा में जेमादवीशिक्षित वधू घर लाती हैं जो वाह्यक्षेत्र में कार्य करती है। दोनो केमध्य अपूर्ण अपेक्षाओं के कारण कलह का वातावरण रहता है।इसलिए दोनो अलग रहती हैं-

**"पुत्रः बहु परिश्रम्य अन्ततः शिक्षकवृत्तिं प्राप्तवान।**

**जेमा देवी प्रसीदत । शीघ्रतया तस्यविवाहंकारितवती ।**

**वधूः शतरूपा शिक्षायित्री उभयोः साहचर्यमवाप्यवृद्धा सकलश्रमं विस्मृतवती।**

**स्वभूवधू कलहःअविश्वासमवर्धयत ।**

**अधिकार मोहे श्वश्रू गृहे न्ववसत वधूःवृत्तिमादृत्य कर्मक्षेत्रं प्रस्थिता।**

**पुत्रस्तु उभयस्य सन्तुलनमभिलष्यकतिपय दिनानि गृहे कति दिनानि च पती पाध्ये अत्यवाहयत।**

इसी प्रकार 'पितामही मिलिता की पात्र इन्दुमती गृहस्थी वकार्य क्षेत्र के कार्याधिक्य के मध्य पारिवारिक कलह से ग्रस्त होश्वश्रू को वृद्धाश्रम भेजने का आग्रह करती है-

**शिभोः लालन-पालेनयोः रतायै इन्दमन्यै श्वभूसेवां कर्तुं पर्याप्तः समयाः न मिलतिस्म।**

**शिक्षाया यद् दायित्वं सा स्वेच्छया सम्भालितवती आनीत् अपि शैथिल्यम् उपस्थिम् एव।**

**इदानीं सर्व जानती अपि वृद्धावस्थाप्रामा**

**शकुन्तला स्वकीयान् रोपमयान् उद्गारान् प्रकटयति स्म एवं।**

डॉ. वीणापाणि पाटनी ने 'अपराजिता" में दहेज प्रथा से क्षुब्ध वधूद्वारा परिवार त्यागने का वर्णन किया है।

शहरीकरण भी मानवीय सम्बनधों में कटुता का कारण है। डॉ. केशवदाश की 'उर्मिचूड़ा तथा डॉ. इच्छाराम द्विवेदी ने *'पश्चात्तापः'*एकादशी नामक लघु कथा में इस पीड़ा को व्यक्त किया है।

**'स्थानेऽस्मिन् सर्व मिलिष्यति, यद्वक्तव्यं सुन्दरं भवेत् ।**

**ग्रामं विहाय लम्बोदर सपत्रीकः अत्र समागतः।**

**' 'कियद्भिरेव मासैः सा पूर्णतया ग्रामपरिवेशात् क्षुब्धा संजाता।**

**तयोमध्येएबमहरहःकलहः समारब्धः।**

डॉ. नलिनी शुक्ला की आकृतार्थमभिभावकत्वम् में भी परिवार के मध्य होने वाली मानवीय सम्बन्धों की पीडाओं को यथार्थतः व्यक्त किया गया है।

दाम्पत्य सम्बन्धों का विश्लेषण भी संस्कृत लघुकथाओं का मुख्य कथ्य है। पति पत्नी का सम्बन्ध निष्ठा और सहयोग पर निर्भर करता है। पति निष्ठा की जितनी अपेक्षा

पत्नी से करता है उतनी ही पत्नी पति से। ***'एकचक्रः'*** नामक कथा की कुछ पंक्तियों में इसी सम्बन्ध को स्पष्ट किया गया है-

**'मिथः प्रणयनिबद्धयोद्रद्वयोः स्त्री पुरूपयोः नैष्ठिक संयोगः।**
**निष्ठैव दाम्पत्यमूलम् । इयं निष्ठाऽप्युभयपक्षीयैव ।**
**यथा पत्या निष्ठा पति प्रत्यपेक्ष्यते तथैव पत्नीं प्रति पत्युरपि।"**

पति व पत्री का सम्बन्ध उतना आत्मीयपूर्ण होता है कि एक के भी न रहने पर दूसरा स्वयं में अकेलेपन का अनुभव करता है। जैसा कि डॉ. राजेन्द्र मिश्र द्वारा अपनी कथा 'एकचक्रः' में वर्णित किया गया-

**सः एव कुटुम्व परिवेशः। तदेव ज्ञाति मित्र परिचित स्वजन-मण्डलम् ।**
**परन्तु लीला विहीनं न किमप्यात्मीयं प्रतीयते। सर्वमेव विपर्यस्तं जातम् ।**

डॉ. केशव चन्द्र दाश ने भी दाम्पत्य सम्बन्धों की गम्भीरता को'दोषी' 13 नामक कथा में दर्शाया है। श्री गणेश शमां की भानुषेह'तथा श्रमदेवी कथा में एवं डॉ. केशव चन्द्र दाश कीदूरस्थतोलके कथा में पत्नी व पति के मधुर सम्बन्धों से सुखी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया गया है, परन्तु वर्तमान में दाम्पत्य सम्वन्धों का विघटन हो रहा है, जिसका प्रमुख कारण कलह है। संस्कृत कथाओं में बदलते परिवेश में उत्पन्न दाम्पत्य समवन्धों की समस्याओं को भी उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। दाम्पत्य जीवन का आरम्भ विवाह से होता है। परस्पर वैचारिक अनुकूलता, समरसता द्वारा इसे पुष्ट किया जाता है। परिवार के विखरने और नष्ट होने के कारणों को जानने पर ज्ञात होता है कि उथला या संकीर्णता पूर्ण आचरण ही इसका कारण है। 'पोत विहगों में जव निहाल अपनी कर्त्यव्यच्युत पत्नी से असन्तुष्ट होकर महुली से विवाह कर लेता है तथा पिता के पूछने पर कहता है

**"ताता की दृशी पत्री ? याऽकारणं पर्ति विद्वेष्टि, तच्चरितं- आशंकते, शपथमपिकूटाभिनयं**
**मन्यते..... प् प् पत्यासार्धं शयितुं न वाञ्छति किमसौ पत्नी।**

विवाह हेतु पति-पत्नी की आपसी सहमति के विषय को डॉ. केशवचन्द्र दाश ने अस्थायिच्छत्रम् 18 में दर्शाया गया है जो परिवारिक दवाव में विवाह तो कर लेते है किन्त प्रथम रात्रि में ही नायक अवधूत की सहचरी कादम्बिनी उसे आकर ले जाती है।

दाम्पत्य सम्बन्धों में बिखराव का एक कारण नारी चेतना भी है 'शंखनाद' की नायिका भागीरथी अपने पति द्वारा किए जाने बाले अत्याचारों को सहन करते हुए एक दिन उसके विरूद्ध आवाज उठाती है। "अहं यदा उत्थातुं तदा प्रायते अंगानां पीडया जर्जरिता संवृत्ता।

शरीरेण दीनापि मनसः शक्त्या व्यचिन्तयम् नाहमीदृशम्ममानं सहिष्ये। अस्मिन्नेव क्षणेऽस्य जीवनस्य गतिः परिवर्तनीया अन्यथा प्रागाढान्धकारे निलीना भविष्यामि।... सांयकाले पत्युरागमनात् प्रागेवाहं पतिकुलं परित्यज्य जम्मूनगरं सम्प्रामा। इसी प्रकार विजया नामक कथा में लीला पति के द्वारा किये गये अपने. परिवार के प्रति अपमान को भूल नहीं पाती और अन्ततः दोनो परिवारों को छोड़कर चली जाती है। शहरी चमक-दमक भी सम्बन्धों के विघटन का कारण है। इसी तथ्य को डॉ. इच्छाराम द्विवेदी ने अपनी कथा 'पश्चात्तापः' में

प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार संस्कृत कथाकारों ने दाम्पत्य सम्बन्धों को कथा का कथ्य बनाया है।

भारतीय संस्कारों से संस्कारित भारतीय समाज पति-पत्री के एक निष्ठापूर्ण प्रेम का पक्षपाती रहा है। जिसका आधार है पति- पत्नी का परस्पर विश्वास, किन्तु जव पति किसी अन्य स्त्री की ओर उन्मुख होता है तो पत्री का विश्वास डगमगाने लगता है। पत्नी अपने पति की सपत्री को उन्मुक्त हृदय से स्वीकार नहीं कर पाती। नारी की इस प्रवृत्ति को समाज में सौतिया डाह कहा जाता है। 'सौतिया डाह' से सन्तप्म कहीं उसका आक्रोश झलकता है तो कही विवशता के अश्रु छलकते हैं। इस प्रकार नारी की मनः स्थिति को लघु कथाओं में अति प्रभावी व मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

उदाहरणार्थ-डॉ. राजेन्द्र मिश्र ने 'सिंहसारि' कथा में, द्विजेन्द्र नाथ मिश्र ने 'चम्पा' नामक कथा में, केशवदास ने 'पन्था' में वीणापाणि पाटनी ने 'कुलीना' में तथा 'वातायनम्' में सपत्री सम्बन्धों को दर्शाया है।

भारतीय परिवारों में पत्र प्रेम को वरीयता दी जाती है। प्राचीन संस्कारों, रूढ़ियों एवं कर्तव्यों के कारण पुत्र-प्रेम स्वाभाविक सा प्रतीत होता है। इसी धारणा के कारण अयोग्य पुत्र भी माता-पिताके लिए प्रेम तथा अनुकरण का पात्र बन जाता है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुतहै- श्रमदेवी कथा में पुत्र जन्म से लक्ष्मी को सम्मान मिलता है- "पुत्र जन्म हेतोः सा सर्वेषां कुटुम्विनां प्रियापि सुत्तरां प्रीतिपात्रा बभूव॥

'शतपर्विका' कथा में पुत्रकामना में ही सात पुत्रियों का जन्म होता है-"स्वकीयं कन्यासैन्यं दृष्ट्वैन रामलालो दुस्सहवेदनामेति। नितरां चिन्तयति ममैव भालपट्टे कथमिमा लिखिताः पुत्रमेकं कामये।

इसी प्रकार आकृतार्थमभिभावकत्वम् लघु कथा में डॉ नलिनी शुक्ला ने 'हाँ', नामक लघु कथा में डॉ. केशवदाश ने-(ततः पुत्रोजातः, मानसिकी स्थितिः स्थिरां कहकर), 'निष्क्रान्ति' नामक कथा में श्री जवाहर लाल शर्मा ने इस पुत्र प्रेम विषय को उठाया है।

पुत्र वर्चस्व व पुत्र प्रेम का यह विषय वर्तमान समय तक आतेआते परिवर्तित हो चुका है। आज पुत्र के साथ पुत्री को सवैधानिक अधिकार दिए जाने के लिए समाजव सरकारदोनो ही अपना समर्थन दे रहे हैं। संस्कृत लघु कथाकार भी इस तथ्य के प्रति उदासीन नहीं है बल्कि सभी ने इस पर ध्यान दिया है। यथा श्री देवकीनन्दन शास्त्री की कथा 'मनोरमा' डॉ. केशवदाश की कथा 'प्रतिवद्ध २७ डॉ. राजेन्द्र मिश्र की कथा रांगडा इसके प्रवल उदाहरण प्रस्तुत करती है। डॉ. राजेन्द्र मिश्र की लघुकथा 'एकहायनी' का पुत्री के प्रति बदलते दृष्टिकोण सम्बन्धी उदाहरण दृष्टव्य है-"कन्याचीत्कार उत्तरोत्तर वृद्धिमवाप। उत्थातव्यमेव। विमनस्काविमलोत्थाय कन्या समीपं गतवती..... मातरं दृष्ट्वा कन्या पुनरपि आकाशे प्राणिहित भुजा सिन्धुफेनसंहतिरिव समुच्छलन्ती स्मितं कृत्यती। संझम्पं कायंप्रणिधाय विमलातामेकहायनीं कन्यां खेहगर्भ चुम्वनैर्लालयन्ती समुत्थाय स्त्रोत्संगमधिरोपितवती। इस प्रकार पुत्री के प्रति बदलते दृष्टिकोण को भी संस्कृत लघुकथाओं में व्यक्त किया गया है।

मानवीय सम्वन्धों की श्रृंखला में प्रणय सम्वन्धों को भी नकारा नहीं जा सकता। ये सम्बन्ध दो प्रकार के होते हैं-१. आत्मिक प्रणय, जो त्याग की भावना से ओतप्रोत हों, २. वासनाजन्य प्रणय, जिसका आधार केवल काम भावना को शान्त करना है। इस दूसरे प्रकार क प्रणय आधुनिक संस्कृत कथाकार को अभीष्ट नहीं। फिर भी बर्तमान समाज में दूसरे प्रकार के प्रणय सम्वन्धों का ही आधिक्य है वह ध्यान रखते हुए इस प्रकार के सम्बन्धों का वर्णन लघु कथाकारों ने किया साथ ही उनके लाभालाभ को भी वर्णित करने से संकोच नहीं किया। स्नायु ग्रंथि पंजर शुक कपटस्य नियतिः चञ्चा कुलीना निर्णय नूपुरम् कथाएं इाके सशक्त उदाहरण है। प्रणय की स्थिति में दोनो में एक भी प्राणी का जीवन स्वतन्य नही होता। इस भाव को डॉ. राजेन्द्र मिश्र जी ने इस प्रकार स्पष्ट किया "प्रणय बन्ध ने समुपवद्धयोः प्राणिनो जीवनं न स्वातन्त्रम्। एकस्यापरस्योपरि भवति पूर्णाधिकारः। प्रणयवंचित पुरूपं स्त्री वा न जीवितुं शक्नोति। जीवनपि मृतो नरः। जीवन्यपि मृता नारी।

प्रणय के कारण असमंजस की स्थिति, केवल शारीरिक आकर्षण को प्रणय मानकर छली गई स्त्री, विवाहोपरान्त प्रणय को यथार्थ के धरातल पर तोलने की सच्चाई, इत्यादि सभी पक्षों को

आधुनिकीकृत रूप में कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मानवीय सम्वन्धों को निभाने में नारी एक महत्वपूर्ण धुरी है।

चाहे पारिवारिक सम्वन्ध हों, दाम्पत्य सम्बन्ध हों, प्रणय सम्वन्ध हों या अन्य रिश्ते। इस दृष्टि से नारी हर रूप में सम्बन्ध रक्षिका के रूप में दिखलाई देती है। आधुनिक युग में नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ है आज वह मात्र गृहिणी, कोमलांगी या अद्र्धांगिनी ही नही अपितु आर्थिक सहयोग करने वाली, घर की देहरी के बाहर भी अपनी कार्यक्षमता को स्थापित करने वाली एवं पति की सहचारिणी के रूप में दिखलाई देती है, किन्तु पारिवारिक सम्बन्धों को संजोए रखने के लिए उसे अथक प्रयास करना पड़ता है। 'कलरवश्चिन्ता च' में कार्यशील नारी के इस पक्ष को अति सम्यक्तया प्रतिपादित किया गया है-नन्दिनी ससम्भ्रमं, महानसादिश्य अधावत, तत च मातुः तिरस्कार पूर्णया दृष्ट्या, पाषाणक्षेषप्रक्षेपैश्च वराकी नन्दिनी स्तब्धातिष्ठत शिशूनां विद्यालये प्रेषणानन्तरं पाकशालातः निवृत्तिं लभमानाय एव तस्या सपादनववादनसमयोऽभवत् नन्दिनी त्वरितम् एवं वस्त्रपरिबर्त व्यदधात्। सात्वरितमेव रिक्षामारुहय कतिपयेः क्षणैः महाविद्यालये समुपस्थात्।

कार्यशील महिलाएँ कार्यक्षेत्र में बड़ेबड़े अधिकारियों के शोषण को आज किस प्रकार झेलती हुई व्यथित होती हैं। आज इतने विकास के बावजूद भी नारी के प्रति पुरूष की शोषण-प्रवृत्ति ने सम्बन्धों को अविश्वसनीयता की श्रेणी में खड़ा करके रखा है। 'लुम्बिनी' कथा में इसका अति यथार्थतः उल्लेख है-बचनमिदं निशम्य लुम्बिनी अन्वभवत् सा यथा निशार्धस्य देहजीवनी। तस्या हृदयं विदीर्णा। सा आत्मनमपृच्छत् किमियं शिक्षा? किमिदं शैक्षिक शासनम्? किमियं शिक्षण सेवा? धन्या इयं रति सर्वस्व सेवा।

इस प्रकार मानवीय सम्बन्धों की कसौटी पर नारी के बदलते स्वरूप को संस्कृत कथाकारों ने अति संवेदनात्मक रूप में व्यक्त किया। अत्याधुनिक कहलाने की ललक और व्यक्ति स्वातन्त्र्य ने जहाँ एक ओर नारी व्यक्तित्व को नये आयाम दिए हैं वहीं अनेक समस्याओं का जन्म 'भी हुआ यह कहा जा सकता है कि नारी घर- बाहर के सम्बन्धों को सँभालते- सँभालते ऐसे व्यूह में फँस गई है जिसमें वह एक यन्त्र की भाँति ही बनकर रह गयी।

**समापन:**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मनुष्य जीवन का पूरा तानाबाना मानवीय सम्बन्धों पर आधृत है जिसका महत्वपूर्ण अंग परिवार-दाम्पत्य-गृहस्थी व नारी है। इन सभी में प्रत्येक प्रत्येक सम्बन्ध का अपना स्थान है सामाजिक परिवर्तन की स्थिति में सब कुछ परिवर्तित हो रहा है। शिक्षा के प्रचास-प्रसार से रूढ़ियाँ दूर हो रही हैं, पुत्री व पुत्र को अलग-अलग परिभाषित न करते हुए 'सन्तान' के नाम से कहने की परम्परा आरम्भ हो चुकी है। नारी घर की दहलीज से निकलकर अपने आत्म सम्मान की रक्षा करते हुए अपनी पहचान बनाने को आतुर है। इन सभी विषयों पर संस्कृत लघुकथाकारों की पैनी दृष्टि है। आज की संस्कृत लघुकथाएँ आदर्श के कोरे उच्चादर्श ही तैयार नहीं करती अथवा 'फैन्टेसी' या कल्पना लोक में विचरण नहीं कराती, अपितु प्रत्येक मानवीय सम्बन्ध का यथार्थ चित्रण करते हुए यह सिद्ध करने का प्रवास करती हैं कि परस्पर सहयोग व ईमानदारी की भावना समाज को एक सूत्र में बाँधती है। सम्पूर्ण विकास व विकसित सभ्यता के आधार मानवीय सम्बन्ध ही हाते हैं जिन पर आज मनुष्य उपेक्षा का भाव धारण कर रहा है इनकी रक्षा करना अत्यावश्यक है इसी कारण संस्कृत कथाकारों ने इन सभी आधुनिक विषयों को हृदय से स्वीकारोक्ति प्रदान की है।

## संदर्भ सूची:


संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (ससम खण्ड), पू.-468.
2. साहित्य का श्रेय और प्रेय-जैनेन्द्र कुमार, पू.-168.
3. समाज शाख-एम.एल.गुप्ता, डी.डी. शर्मा, पृ.-63.
4. कलरवचिन्ता च-कथा सप्तकम् डॉ नलिनी शुक्ला, पृ.-78.
5. उर्मिचूहा, डॉ. केशवदाश, पृ.-60
6. पितामही मिलिता, राजकथा कुअम्, डॉ. नारायण शास्त्री कॉकर, पू.30
7. अपराजिता, वीणापाणि पाटनी, पृ.-19
8. गर्भदासः-उर्मिचूड़ा, डॉ. केशव चन्द्रदाश, पृ.- 25
9. पश्चात्तापः एकादशी, डॉ. इच्छाराम द्विवदी, पृ.- 8
10. अकृतार्थमभिभावकत्वम्-कथासप्तकम्, डॉ. नलिनीशुक्ला, पृ.116-117
11. एकचक्र कथा, रांगडा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.-59

12. वही- पु.- 60
13. दोषी, उर्मिचूड़ा, डॉ. केशव चन्द्रदाश, पृ. 58-59
14. भातृस्नेहकथा, संस्कृत कथा कुञ्जम् संग्रह गणेशराम शर्मा, पृ.- 60
15. श्रमदेवी -वही ----- .-66
16. दूरस्थतोलके, दिशा-विदिशा संग्रह, डॉ. केशवचन्द्रदाश, पृ.- 20
17. पोतविहङ्गी रांगडा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 66
18. अस्थायिछत्रम्, दिशा विदिशा संग्रह, डॉ. केशवचन्द्रदाश, पू.- 20
19. शंखनाद, अपराजिता, डॉ. वीणा पाणि पाटनी, पृ. 44-45
20. विजया, सिद्धेश्वरी वैभवम्, डॉ. द्वारका प्रसाद शास्त्री, पृ० 11-12
21. पश्वात्तापः, एकादशी डॉ. इच्छाराम द्विवेदी, पृ.- 8
22. श्रमदेवी, गणेशराम शर्मा, पू.- 77
23. शतपर्विका, इक्षुगन्धा डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 37
24. कथाससकम्, पृ.-121
25. दिशा विदिशा, पृ.- 9
26. राजकथा कुञ्जम्, पृ.- 94
27. मनोरमा, अभिनव कथा निकुंज, देवकीनन्दन शास्त्री, पृ. 147
28. प्रतिबद्ध, उर्मिचूडा, डॉ. केशवदाश पृ० 87
29. रांगडा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 107
30. एकाहायनी, इक्षुगन्धा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 36
31. स्नायुग्रन्थि, दिशा विदिशा, डॉ. केशवदाश, पृ.- 75
32.पञ्जरशुक, एकादशी, डॉ. इच्चद्राराम द्विवेदी, पृ.- 53
33. कपटस्य नियतिः, सिद्धेश्वरी वैभवम्, द्वारका प्रसाद शास्त्री, पृ.- 56
34. चञ्चा, रांगडा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 31
35. कुलीना, अपराजिता, डॉ. वीणापाणि पाटनी, पृ.- 33
36. निर्णय, एकादशी, डॉ. इच्दाराम द्विवेदी, पृ.-18
37. नूपुरम्, दिशा विदिशा, डॉ. वेशवदाश, पृ.- 55
38. एकहायनी, इक्षुगन्धा, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, पृ.- 35
39. कलरवश्चिन्ता च, कथासप्तकम्, डॉ. नलिनी शुक्ला, पृ. 67-68
40. लुम्बिनी, दिशा-विदिशा, डॉ. केशवदाश, पृ.- 97.

**डॉ. राकेश ऐन. जोशी**
एसोसिएट प्रोफेसर आर्टस् एण्ड कॉमर्स कॉलेज
हिंमतनगर.